प्रदीप उर्फ डब्बा डोल: एक किशोर स्वच्छता प्रचारक

वह 13 साल के किसी भी बच्चे की तरह ही है। शैतानी करना, दोस्तों के साथ खेलना, पाठशाला से आने के बाद क्रिकेट खेलना उसे पसंद है। पढाई में वह औसत है और विषय के तौर पर विज्ञान उसे अच्छा लगता है। पर उसकी एक विशेषता उसे उसकी उम्र के दूसरे बच्चों से अलग करती है। वह स्वच्छ भारत अभियान का एक किशोरयोद्धा है। वह खुले में शौच करने से जिस तरह से रोकता है उसका उपनाम "डब्बा डोल" पड़ गया है।

रायपुर नयाखेड़ा का रहने वाला प्रदीप कक्षा 8 का छात्र है। वहअपने गांव में आयोजित होने वाले सीएलटीएस कार्यक्रम में शामिल हुआ। जहां उसने स्वच्छता की जरुरत और अवधारणा को समझा और अपने गांव को खुले में शौच से मुक्ति दिलाने के लिए प्रतिबद्ध हो गया। जब उसने देखा कि शौचालय बनाने की कोशिशों के बावजूद वांछित सफलता नहीं मिल रही है और खुले में शौच जारी है, तो उसने इसके लिए कुछ करने का फैसला कर लिया।

इसके लिए उसने एक नायाब तरीका चुना। उसने अपने दस दोस्तों को लेकर एक दल का गठन किया। जो भोर होते ही उन लोगों के पीछे निकल पड़ते जो खुले में शौच के लिए जा रहे होते और उनके पानी के डिब्बा, बोतल या लोटे को गिरा देते। इससे लोगों को शौचकर्म पूरा करनें में दिक्कत होती। चूंकि वह पानी का बर्तन गिरा देता। लिहाजा उसका नाम "डब्बा डोल" पड़ गया।प्रदीप कहता है, " मुझे मेरे दोस्त चिढ़ाने के लिए इस नाम से बुलाते हैं।"

लेकिनइस अच्छे काम का उसे कुछ खामियाजा भी भुगतना पड़ा। गांव वाले उस पर काफी गुस्सा करते, बदमाश कह कर बुलाते एवं घर पर शिकायत भी करने आते जिनके लिए उसकीमां को चाय भीबनानी पड़ती। प्रदीप के पिता अजीब सिंह कहते हैं,"गुस्साये गांव वाले तो मेरे घर के शौचालयको तोड़ने भी आ गए थे।पर गांव के मुखिया के हस्तक्षेप से शौचालय टूटने से बच गया था।"

गांव में अजीब सिंह का परिवार उन लोगों में पहला था जिन्होंने सीएलटीएस कार्यक्रम के आठ दिनों के अंदर अपने घरों में शौचालय बनवाये थे।

प्रदीप कहता है, "लोगों का खुले में शौच करना बहुत गंदी बात है। यदि हमारे पास विकल्प है तो हम इसे क्यों नहीं अपनाते।"

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड